ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

भारत की विदेश नीति और आसियान : एक समकालीन विश्लेषण

प्रो. विनीता पाठक, आचार्या, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
आशीष कुमार मिश्र, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

शोध सारांश

भारत और दक्षिण पूर्व एशिया ने सहस्राब्दियों से ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंध साझा किए हैं। शीत युद्ध काल की शुरुआत तक इन दोनों क्षेत्रों के बीच संबंधों की यह बहुआयामी सौहार्दता बरकरार रही। भारतीय नेतृत्व का न केवल एक बड़ा सहानुभूतिपूर्ण रवैया था, बल्कि उसने उपनिवेशवाद विरोधी काल के दौरान दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन भी किया। हालाँकि, एशियाई संबंध सम्मेलन (1947) और बांडुंग सम्मेलन (1955) के दौरान बहुत ही संक्षिप्त अवधि के लिए देखी गई सौहार्दता की पराकाष्ठा, शीत युद्ध की शुरुआत के साथ खो गई। हालांकि, शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, आंतरिक और बाहरी परिवेश में भारी बदलाव हुए, जिसने भारत को इस क्षेत्र के संबंध में अपनी विदेश नीति को नया स्वरूप देने के लिए मजबूर किया। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, 1991 में तत्कालीन नरसिम्हा राव सरकार द्वारा शुरू की गई भारत की पूर्वोन्मुखी नीति के कारण, दक्षिण–पूर्व एशिया ने भारत की विदेश नीति के विचार–विमर्श में अपना महत्व पुनः प्राप्त कर लिया।दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्रों के संगठन (आसियान) के प्रति भारत की विदेश नीति पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय रूप से विकसित हुई है, जो ''लुक ईस्ट'' और ''एक्ट ईस्ट'' नीतियों के माध्यम से निष्क्रिय रुख से सक्रिय जुड़ाव की ओर परिवर्तित हुई है। यह शोध आसियान देशों के साथ भारत के सामरिक, आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। यह आलेख इस बात का पता लगाता है कि भारत दक्षिण–पूर्व एशिया में अपनी भू–राजनीतिक उपस्थिति को आकार देने के लिए सांस्कृतिक संबंधों, क्षेत्रीय एकीकरण, समुद्री सुरक्षा सहयोग और आर्थिक साझेदारी का कैसे लाभ उठाता है। यह शोधपत्र भारत–आसियान संबंधों के ऐतिहासिक संबंध, संस्थागत तंत्र और रणनीतिक पहलों का गहन अध्ययन करता है, विशेष रूप से चीन के बढ़ते प्रभाव और हिंद–प्रशांत क्षेत्र के आलोक में। यह व्यापार घाटे, संपर्क सीमाओं और क्षेत्रीय अस्थिरता जैसी प्रमुख चुनौतियों का भी मूल्यांकन करता है।,

संकेत शब्द :– भारत, आसियान, विदेश नीति, एक्ट ईस्ट, दक्षिण–पूर्व एशिया, क्षेत्रीय कूटनीति, हिंद–प्रशांत, रणनीतिक साझेदारी।

प्रस्तावना

दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संघ (आसियान) एक क्षेत्रीय समूह है, जिसकी स्थापना 8 अगस्त 1967 को बैंकॉक, थाईलैंड में आसियान के संस्थापक सदस्यों: इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड द्वारा आसियान घोषणापत्र (बैंकॉक घोषणापत्र) पर हस्ताक्षर के साथ हुई थी। इसका उद्देश्य अपने दस सदस्यों: ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम के बीच आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देना है।आसियान का आदर्श वाक्य ''एक दृष्टि, एक पहचान, एक समुदाय'' है। आसियान देशों की कुल जनसंख्या 662 मिलियन है और 2022 तक इनका संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 3.2 ट्रिलियन डॉलर है।शीत युद्धोत्तर काल में, विशेष रूप से दक्षिण–पूर्व एशिया के संबंध में, भारत की विदेश नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। 10 सदस्यीय दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) द्वारा प्रतिनिधित्व वाला यह क्षेत्र, क्षेत्रीय प्रभाव, आर्थिक विविधीकरण और रणनीतिक स्वायत्तता की भारत की खोज में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में उभरा है। चीन की मुखरता, अमेरिका का एशिया की ओर झुकाव और हिंद–प्रशांत क्षेत्र की बढ़ती केंद्रीयता जैसी उभरती भू–राजनीतिक व्यवस्था के मद्देनजर भारत–आसियान संबंधों ने विशेष महत्व प्राप्त कर लिया है। भारत की सुरक्षा के लिए दक्षिण–पूर्व एशिया का सामरिक महत्व नाटकीय रूप से तब उजागर हुआ, जब जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1941 से उत्तर–पूर्वी भारत पर जमीन, समुद्र और हवा से हमले करके दक्षिण–पूर्व एशिया से भारत पर आक्रमण किया।' इन घटनाक्रमों पर ध्यान देते हुए, प्रख्यात भारतीय विद्वान व राजनयिक के.एम. पणिक्कर ने टिप्पणी की दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों का 'राजनीतिक भविष्य', 'उनके आर्थिक विकास और उनकी सुरक्षा के संबंध में', भारत के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है'? इसके अलावा, भारत की केंद्रीयता पर प्रकाश डालते हुए, पणिक्कर ने दक्षिण–पूर्व एशिया की रक्षा के लिए 'सामूहिक सुरक्षा' की एक प्रणाली के निर्माण की वकालत की साथ ही भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच अन्योन्याश्रयता पर आधारित एक 'सह–समृद्धि क्षेत्र' के गठन की भी वकालत की। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और तत्कालीन विदेश मंत्री जवाहरलाल नेहरू का मत था, कि अपनी वास्तविक और

अव्यक्त भौतिक शक्ति के साथ–साथ अपनी भू–रणनीतिक स्थिति के परिणामस्वरूप, भारत निश्चित रूप से 'एशिया की धुरी' बनेगा।आसियान के साथ भारत का जुड़ाव आर्थिक साझेदारी, सुरक्षा संवाद, बुनियादी ढाँचा सहयोग और सांस्कृतिक कूटनीति के एक जटिल संबंधो का प्रतिनिधित्व करता है। 1992 मे पूर्व की ओर देखो नीति (एलईपी) के बाद 2014 में आई एक्ट ईस्ट पॉलिसी (एईपी) ने आर्थिक एकीकरण और रणनीतिक संतुलन दोनों पर जोर देते हुए पूर्व की ओर भारत के झुकाव को मजबूत किया है। भौगोलिक निकटता, साझा सभ्यतागत संबंधों और अभिसरित आर्थिक हितों को देखते हुए, आसियान भारत की विदेश नीति के ढाँचे में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है।

भारत–आसियान संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत का जुड़ाव प्राचीन काल से है, जो सांस्कृतिक, धार्मिक और समुद्री आदान–प्रदान द्वारा जुड़ा है। भारतीय व्यापारियों और बौद्ध मिशनरियों ने बंगाल की खाड़ी से दक्षिण पूर्व एशिया की यात्रा की, जिससे इंडोनेशिया, कंबोडिया और थाईलैंड जैसे कई आसियान देशों के सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य प्रभावित हुए। हालांकि, शीत युद्ध के दौरान, भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्ष और समाजवादी आर्थिक मॉडल की ओर झुकी थी। जिसके परिणामस्वरूप आसियान के साथ भारत का सीमित जुड़ाव रहाद्यजबकि आसियान का पश्चिमी ब्लॉक के साथ गठबंधन माना जाता था।1960 के दशक से शीत युद्ध के अंत तक,आसियान का भारत के साथ संबंध शीत युद्ध के अंतर्राष्ट्रीय वातावरण से प्रभावित था। इसके अलावा,दक्षिण पूर्व एशिया के दृष्टिकोण से देखा गया, इस अवधि में तेजी से बदलते रणनीतिक वातावरण का प्रतिनिधित्व था। 1964 के बाद से, अमेरिका वियतनाम में उलझा हुआ था। इस अवधि के दौरान वियतनाम में पश्चिमी हस्तक्षेप का भारत द्वारा विरोध किया गया। भारत का वियतनाम में अमेरिका की भागीदारी के मुखर विरोध ने उसके संबंधों में मुश्किलें पैदा कीं। सबसे बड़ा दक्षिण पूर्व एशियाई राज्य इंडोनेशिया के साथ भारत के रिश्ते में काफी गिरावट आई, जब 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान इंडोनेशिया ने पाकिस्तान का समर्थन किया व इंडोनेशिया को भारत के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर हमला करके दूसरा मोर्चा खोलने के लिए तैयार किया गया। जिससे भारत का ध्यान और संसाधन पाकिस्तान से हट जाए। भारत ने अगस्त 1971 में सोवियत संघ के साथ 20 साल की मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किया। कुछ ही महीनों के भीतर, भारत ने 1971 के बांग्लादेश युद्ध में अपने दक्षिण एशियाई प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को पराजित कर दिया और उसका विभाजन कर बांग्लादेश का निर्माण किया। पाकिस्तान के विखंडन के साथ भारत दक्षिण एशिया में एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा और कुछ हद तक एक सैन्य शक्ति के रूप में अपना दर्जा भी पुनः प्राप्त कर लिया, जो उसने 1962 के बाद खो दिया था। हालाँकि, दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों को इस क्षेत्र के लिए भारत की योजनाओं पर फिर से संदेह होने लगा क्योंकि उन्हे लगा कि भारत की नई स्थिति के पीछे सोवियत शक्ति छिपी है। हालाँकि, 1971 के बांग्लादेश युद्ध के बाद दक्षिण–पूर्व एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र भारत की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया था क्योंकि युद्ध के दौरान अमेरिका ने बंगाल की खाड़ी से भारत के लिए एक नौसैनिक खतरा पैदा कर दिया था। इस युद्ध के दौरान अमेरिका ने दक्षिण चीन सागर से यूएसएस एंटरप्राइज वाहक समूह (जिसे नई दिल्ली के रणनीतिकारों द्वारा परमाणु हथियारों से लैस माना जाता है) भेजा था। दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशिया में सामरिक वातावरण 1970 के दशक की शुरुआत में चीन–अमेरिका के बीच हुए मेल–मिलाप के साथ और भी जटिल हो गया था।

इन अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों ने भारत को 1970 के दशक में दक्षिण–पूर्व एशिया में किसी भी सार्थक रूप से शामिल होने से रोक दिया। 1979 में अफगानिस्तान पर सोवियत आक्रमण के प्रति भारत की धीमी प्रतिक्रिया और वियतनाम द्वारा कंपूचिया (कंबोडिया) पर आक्रमण के बाद हेंग समरीन सरकार को नई दिल्ली द्वारा मान्यता दिए जाने की घोषणा ने भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया से और भी अलग–थलग कर दिया। विशेष रूप से कंपूचिया का मामला आसियान देशों के लिए एक गंभीर चिंता का विषय था, जो उस समय वियतनाम की सैन्य शक्ति (और पूर्व सोवियत संघ के साथ उसके संबंधों) को लेकर चिंतित थे।

1980 के दशक में भारत की नौसैनिक और सैन्य शक्ति का तेजी से विकास, और मलक्का जलडमरूमध्य के मुहाने पर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में एक नौसैनिक अड्डे का विकास, दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के लिए चिंता का एक प्रमुख कारण था।यह भी उल्लेखनीय है कि 1980 तक आसियान देशों के साथ भारत का व्यापार दक्षिण एशियाई देशों के साथ उसके कुल व्यापार से दोगुने से भी अधिक था, और 1990 तक यह चार गुना अधिक हो गया था। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, भारत ने उस क्षेत्र की

स्थानीय फर्मों के साथ संयुक्त उद्यमों के रूप में आसियान देशों में निवेश करना शुरू कर दिया था।1981 तक, ऐसे उद्यमों में भारत के लगभग 40 प्रतिशत विदेशी निवेश आसियान देशों में थे। यद्यपि आर्थिक संबंधों में वृद्धि दर निश्चित रूप से प्रभावशाली थी, भारतीय अर्थव्यवस्था की बंद प्रकृति का अर्थ था कि भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच आर्थिक संबंध उनके विदेशी आर्थिक संबंधों का एक छोटा सा हिस्सा थे। वास्तव में, 1990 के अंत तक, आसियान भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का केवल 6 प्रतिशत हिस्सा भारत के पास था, जबकि आसियान के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का बमुश्किल 1 प्रतिशत हिस्सा भारत के पास था। इन आर्थिक वास्तविकताओं और उनके विभिन्न भू–राजनीतिक झुकावों को देखते हुए, इस अवधि में भारत के आर्थिक संबंधों ने दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संबंधों ने रणनीतिक बढत हासिल नहीं किया।

यह कहा जा सकता है कि, शीत युद्ध के दौरान भारत दक्षिण–पूर्व एशिया में एक सीमांत खिलाड़ी की तरह ही रहा। पूर्व सोवियत संघ के साथ अपने गठबंधन के कारण भारत ने दक्षिण–पूर्व एशिया में भू–राजनीतिक तनाव पैदा किया और कई बार भारत को इस क्षेत्र में एक सैन्य (नौसैनिक) खतरा भी माना गया। 1970 और 1990 के बीच (1950 और 1960 के दशक की तुलना में) अपने तेजी से बढ़ते आर्थिक संबंधों के बावजूद, भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया अपने समग्र विदेशी आर्थिक संबंधों में एक–दूसरे के लिए सीमांत बने रहे।ली का यह सपना कि भारत दक्षिण–पूर्व एशिया में एक प्रमुख शक्ति की भूमिका निभाए, भारत के समग्र आर्थिक पिछड़ेपन और सैन्य कमजोरी को देखते हुए साकार नहीं हो सका। इंदिरा गांधी की आसियान के साथ उलझी हुई कूटनीति ने उस क्षेत्र में भारत के प्रति और भी नाराजगी पैदा कर दी। शीत युद्ध भारत–आसियान संबंधों में 'छूटे हुए अवसरों, अविश्वास, गलत धारणाओं और असफल कूटनीति' का दौर था, क्योंकि भारत के पास एक समूह के रूप में आसियान या समग्र रूप से दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र के प्रति समग्र नीति का अभाव था।

1991 में शीत युद्ध की समाप्ति का अर्थ था कि भारत–दक्षिण पूर्व एशिया संबंधों में सबसे गंभीर बाधा, जिसने 1960 के दशक से उनके बीच घनिष्ठ और गहन संपर्क को बाधित किया था, अब इतिहास बन चुकी थी। सोवियत संघ 1989 तक अफगानिस्तान से बाहर निकल चुका था, और कंबोडिया का प्रश्न भी 1991 के अंत तक सुलझने की प्रक्रिया में था। सोवियत संघ के विघटन के साथ, 1971 की भारत–सोवियत संधि भी समाप्त हो गई। भारत को उभरते रणनीतिक माहौल में नए संबंध बनाने की आवश्यकता थी, जिसमें अमेरिका अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में सबसे प्रभावशाली शक्ति था। भारत ने तुरंत नए मित्रों और साझेदारों की तलाश करते हुए अमेरिका के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाने की कोशिश की।भारत द्वारा नए संबंधों की तलाश शुरू करने के साथ ही दक्षिण पूर्व एशिया एक स्वाभाविक उम्मीदवार के रूप में उभरा। कंबोडियाई संकट के दौरान भारत की सक्रिय कूटनीति ने भारतीय विदेश नीति में दक्षिण पूर्व एशिया को महत्ता को समझा गया और इस अवसर को देखते हुए, भारत ने कई दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय आधार पर अपनी राजनीतिक–सैन्य भागीदारी शुरू की। 1991–92 में, भारत ने एक व्यापक 'लुक ईस्ट' रणनीति की शुरुआत की और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ घनिष्ठ राजनीतिक–सैन्य संबंध बनाने की नीति पर काम किया है। भारत ने 1991 में ही इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर के साथ अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के आसपास संयुक्त नौसैनिक अभ्यास शुरू कर दिया था। सिंगापुर ने 1992 में अपनी कुछ मिसाइलों का परीक्षण करने के लिए चांदीपुर स्थित भारत की मिसाइल परीक्षण सुविधाओं का उपयोग किया। भारत और सिंगापुर ने 1993 में लायन किंग वार्षिक द्विपक्षीय पनडुब्बी रोधी युद्ध अभ्यास शुरू किया। भारत ने दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 1993 में मलेशिया के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह किसी आसियान देश के साथ भारत का पहला रक्षा समझौता ज्ञापन था। मिग–29 विमान के लिए कम से कम 100 मलेशियाई पायलटों और जमीनी सहायक कर्मचारियों को भारत में प्रशिक्षित किया गया था। 1993 में, तत्कालीन भारतीय विदेश सचिव, जे. एन. दीक्षित ने रंगून का दौरा किया और भारत की बर्मा के साथ सार्थक संबंध बनाने की इच्छा व्यक्त किया। तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने 1993 में थाईलैंड और 1994 में वियतनाम का दौरा किया। प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव की वियतनाम यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने रक्षा सहयोग के एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए। इन उच्च–स्तरीय राजनीतिक यात्राओं और उनके साथ हुई रक्षा कूटनीति ने भारत के दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ सार्थक संबंध बनाने के इरादे का संकेत दिया। तब से, भारत ने इस क्षेत्र के साथ अपने राजनीतिक–सैन्य संबंध जारी रखे हैं। 2003 में, भारत और सिंगापुर ने एक रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए। 2007 में, भारत ने कलाईकुंडा (पश्चिम बंगाल में) स्थित अपना हवाई

अड्डा सिंगापुर को पट्टे पर दे दिया, ताकि जगह की कमी से जूझ रहा यह देश अपने वायुसेना कर्मियों को भारत में प्रशिक्षित कर सके। किसी विदेशी सेना को भारत में दीर्घकालिक आधार पर प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान करने का यह पहला उदाहरण है। 2008 में भारत–सिंगापुर ने रणनीतिक वार्ता भी की, जो भारत–अमेरिका रणनीतिक वार्ता की तर्ज पर आधारित थी।

अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देश भी भारत की रक्षा कूटनीति के अंतर्गत सम्मलित रहे। 2000 में, वियतनाम की अपनी यात्रा के दौरान, तत्कालीन भारतीय रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडीस ने समुद्री डकैती से निपटने के लिए संयुक्त नौसैनिक प्रशिक्षण की पेशकश की थी। भारत ने वियतनाम को छोटे और मध्यम हथियारों के निर्माण सहित अपने रक्षा उद्योग की स्थापना में मदद करने पर भी सहमति व्यक्त की थी। बदले में, वियतनाम ने भारतीय सेना के अधिकारियों को जंगल युद्ध और उग्रवाद विरोधी अभियानों में प्रशिक्षित करने की पेशकश की थी। 2000 में थाईलैंड द्वारा स्पेन से एक विमानवाहक पोत प्राप्त करने के बाद – जो भारत के अलावा ऐसा करने वाला एकमात्र एशियाई देश था – नई दिल्ली ने थाई समुद्री विमान चालकों को भारत में प्रशिक्षित करने की पेशकश की। 1990 के दशक की शुरुआत में भारत ने आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत की और खुली विदेश नीति अपनाई। आसियान के साथ बढ़ते आर्थिक और भू–राजनीतिक महत्व को पहचानते हुए, 1992 में भारत के प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने लुक ईस्ट पॉलिसी शुरू की। इस नीति ने व्यापार समझौतों, सांस्कृतिक कूटनीति और क्षेत्रीय सुरक्षा पहलों के माध्यम से दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संरचित जुड़ाव की शुरुआत को चिह्नित किया। भारत 1992 में आसियान का एक क्षेत्रीय संवाद भागीदार बन गया, 1996 में एक पूर्ण संवाद भागीदार बन गया और 1996 में आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) में शामिल हो गया। इन कदमों ने दक्षिण पूर्व एशिया के राजनीतिक और सुरक्षा ढांचे में भारत के गहन संस्थागत एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

आसियान के प्रति भारत की विदेश नीति का विकास

1. लुक ईस्ट पॉलिसी (1992–2014)

भारत की पूर्व की ओर देखो नीति शुरू में इसका स्वरूप आर्थिक था, जिसका उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया की गतिशील अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत को एकीकृत करना था। इस नीति ने व्यापार, निवेश और पर्यटन में वृद्धि की। हालांकि, 2000 के दशक की शुरुआत तक, रणनीतिक और सुरक्षा आयाम उभरने लगे, जिसमें रक्षा संवाद, नौसेना अभ्यास और आतंकवाद विरोधी सहयोग शामिल हैं। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान, भारत ने शिखर सम्मेलन–स्तरीय बातचीत, 2009 में आसियान–भारत मुक्त व्यापार समझौता (एआईएफटीए) और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक (एडीएमएम–प्लस) जैसे क्षेत्रीय मंचों में भागीदारी के माध्यम से अपनी राजनयिक पहुंच में काफी वृद्धि की।

2. एक्ट ईस्ट पॉलिसी (2014–वर्तमान)

2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई एक्ट ईस्ट पॉलिसी ने निष्क्रिय जुड़ाव से सक्रिय कूटनीति में बदलाव को चिह्नित किया।एक्ट ईस्ट पॉलिसी (एईपी), भारत की क्षेत्रीय पहुंच के रणनीति का प्रतिनिधित्व करती है। जबकि लुक ईस्ट पॉलिसी ने आसियान देशों से जुड़ने की पहलकारी नीति की नींव रखी।इस नीति ने कनेक्टिविटी, वाणिज्य और संस्कृति पर जोर दिया, इसके साथ ही साथ समुद्री सुरक्षा, डिजिटल साझेदारी और लोगों से लोगों के संबंधों पर भी जोर दिया। इसने भारत–प्रशांत के लिए भारत के दृष्टिकोण का विस्तार किया और बहुपक्षवाद और द्विपक्षीय समझौतों के माध्यम से आसियान के साथ संबंधों को गहरा किया।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी (एईपी)के तहत प्रमुख पहलों में शामिल हैं:–

1. भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग
2. कलादान मल्टी–मॉडल ट्रांजिट
3. पारगमन परिवहन परियोजना
4. भारत–आसियान कनेक्टिविटी समन्वय समिति
5. मलक्का जलडमरूमध्य और दक्षिण चीन सागर में बढ़ी हुई नौसेना उपस्थिति
6. रणनीतिक साझेदारी और रक्षा कूटनीति पर जोर देना
7. जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका सहित दक्षिण पूर्व एशिया से व्यापक हिंद–प्रशांत तक पहुंच का विस्तार करना।
8. भारत के पूर्वोत्तर के विकास को प्राथमिकता देना, जो भौगोलिक रूप से आसियान के लिए भारत के

प्रवेश द्वार के रूप में स्थित है

9. मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी और डिजिटल लिंकेज को बढ़ावा देना
10. ईएएस, एआरएफ और बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय संस्थानों में भारत की भूमिका को गहरा करना

2018 में आसियान–भारत स्मारक शिखर सम्मेलन की भारत की मेजबानी, जिसमें सभी आसियान राष्ट्राध्यक्षों ने भाग लिया, ने भारत–प्रशांत दृष्टि में आसियान केंद्रीयता के लिए नई दिल्ली की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। इसके अलावा, इंडो–पैसिफिक पर आसियान आउटलुक भारत की समावेशी और नियम–आधारित इंडो–पैसिफिक रणनीति के साथ निकटता से संरेखित है।

दक्षिण पूर्व एशिया की संस्थागत संरचनाओ में भारत की भागीदारी

1.	1992	भारत आसियान के साथ क्षेत्रीय वार्ता साझेदार बना, जिससे औपचारिक जुड़ाव की शुरुआत हुई।
2.	1995	आसियान–पूर्ण संवाद भागीदार
3.	1996	आसियान क्षेत्रीयमंच
4.	1998	दक्षिण पूर्व एशिया को परमाणु हथियार मुक्त क्षेत्र घोषित करने संबंधी संधि का अनुमोदन
5.	2000	मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए)
6.	2002	संबंधों को शिखर सम्मेलन स्तर तक उन्नत किया गया, और पहला शिखर सम्मेलन 2002 में
7.	2003	आसियान की मैत्री और सहयोग संधि
8.	2005	पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन
9.	2012	नई दिल्ली में आयोजित 20–वर्षीय स्मारक शिखर सम्मेलन में, वार्ता साझेदारी को रणनीतिक साझेदारी में उन्नत किया गया।
10.	2018	25 वर्षीय स्मारक शिखर सम्मेलन के दौरान, भारत और आसियान समुद्री क्षेत्र में सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने पर सहमत हुए।
11	2022	आसियान–भारत संबंधों की 30वीं वर्षगांठ मनाई गई, जिसे आसियान–भारत मैत्री वर्ष के रूप में नामित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप रणनीतिक साझेदारी को एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी में उन्नत किया गया।

प्रमुख रणनीतिक आयाम

1. आर्थिक संबंध

आसियान के साथ भारत का व्यापार 1993 में लगभग 2.9 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2023 तक 110 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया है, जिससे आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है। आसियान–भारत मुक्त व्यापार समझौता (एआईएफटीए), 2010 से लागू है, इस विस्तार के लिए केंद्रीय रहा है।हालांकि, आसियान के साथ भारत का व्यापार घाटा बना हुआ है, आसियान देशों के पक्ष में व्यापार घाटा है। एआईएफटीए प्रावधानों की संभावित समीक्षा के तहत निर्यात पोर्टफोलियो में विविधता लाने, डिजिटल व्यापार बढ़ाने और सेवाओं और निवेश को बढ़ावा देने के प्रयास चल रहे हैं।

2. रक्षा और सुरक्षा सहयोग

भारत और आसियान एडीएमएम–प्लस, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए) जैसे कई रक्षा मंचों के माध्यम से सहयोग करते हैं। सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में शामिल हैं:

- समुद्री डोमेन जागरूकता
- संयुक्त नौसेना अभ्यास (उदाहरण के लिए, सिंगापुर के साथ सिमबेक्स, मिलान बहुपक्षीय अभ्यास)
- आतंकवाद का मुकाबला और साइबर सुरक्षा
- रक्षा प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

दक्षिण चीन सागर वार्ता में भारत की बढ़ती भागीदारी चीन की मुखरता को संतुलित करने और अंतर्राष्ट्रीय जल में नेविगेशन की स्वतंत्रता को संरक्षित करने के अपने रणनीतिक इरादे का भी संकेत देती है।

3. कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचा

कनेक्टिविटी आसियान के साथ भारत के जुड़ाव की आधारशिला है। भौतिक, डिजिटल और लोगों से लोगों तक कनेक्टिविटी परियोजनाओं का उद्देश्य भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ना और क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देना है। प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में शामिल हैं:

- भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग: व्यापार और गतिशीलता को बढ़ाने के उद्देश्य से म्यांमार के माध्यम से भारत को थाईलैंड से जोड़ने वाली 1,360 किलोमीटर लंबी सड़क।
- कलादान मल्टी–मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट: म्यांमार में कोलकाता और सिटवे बंदरगाह के बीच समुद्र, नदी और सड़क संपर्क प्रदान करता है, जो अंततः भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को जोड़ता है।
- पूर्व–पश्चिम गलियारा और मेकांग–गंगा सहयोग (एमजीसी): कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, थाईलैंड और वियतनाम के साथ भारत के जुड़ाव में परिवहन, संस्कृति, शिक्षा और पर्यटन पर केंद्रित है।

इन परियोजनाओं को नौकरशाही बाधाओं, सीमा क्षेत्रों में सुरक्षा मुद्दों और हितधारकों के बीच समन्वय की कमी के कारण महत्वपूर्ण देरी का सामना करना पड़ता है। हालांकि, उनका सफल समापन भारत के लिए आसियान के साथ शारीरिक रूप से एकीकृत होने और सहज हिंद–प्रशांत के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए महत्वपूर्ण है।

4. सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति

भारत आसियान के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए सांस्कृतिक, धार्मिक और सभ्यतागत संबंधों में निहित अपनी सॉफ्ट पावर का उपयोग करता है। बौद्ध धर्म, साझा विरासत और प्रवासी संबंध इस रणनीति के अभिन्न अंग हैं। इसके अंतर्गत निम्न पहलों को शामिल किया जा सकता हैं:

- आसियान–भारत युवा पुरस्कार और छात्र विनिमय कार्यक्रम
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा अंकोर वाट (कंबोडिया) और माई सोन टेम्पल (वियतनाम) की बहाली
- ट्रैक 1.5 राजनयिक मंच के रूप में वार्षिक दिल्ली संवाद
- दक्षिण पूर्व एशिया में आयुर्वेद, योग और भारतीय भाषाओं के लिए समर्थन

मलेशिया, सिंगापुर और म्यांमार में एक पर्याप्त भारतीय प्रवासी की उपस्थिति भारत की सांस्कृतिक कूटनीति और लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान को और मजबूत करती है।

भारत की एक्ट ईस्ट नीति

चुनौतियां और सीमाएं

महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, आसियान के साथ भारत के जुड़ाव को कई संरचनात्मक और रणनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

2019 में क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) से भारत की वापसी, व्यापार असंतुलन और अपने घरेलू उद्योगों के लिए अपर्याप्त सुरक्षा उपायों पर चिंताओं का हवाला देते हुए, एक झटका था। इसने आसियान और क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ भारत के दीर्घकालिक आर्थिक एकीकरण के बारे में सवाल उठाए।भारत के पूर्वोत्तर में उग्रवाद, म्यांमार के साथ खराब समन्वय और निवेश की कमी के कारण त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान पहल जैसी परियोजनाओं को कार्यान्वयन में देरी का सामना करना पड़ता है। ये कनेक्टिविटी मुद्दे दक्षिण पूर्व एशिया में एक विश्वसनीय रसद और विनिर्माण भागीदार बनने की भारत की क्षमता में बाधा डालते हैं।

आसियान के साथ भारत के रक्षा संबंध, भले ही विस्तारित हो रहे हों, फिर भी गहराई के मामले में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका से पीछे हैं। इसके अलावा, भारत दक्षिण चीन सागर विवादों पर मजबूत रुख अपनाने में सतर्क रहा है, जिसे कभी–कभी रणनीतिक दुविधा के रूप में देखा गया है।चीन की बेल्ट एंड रोड पहल (ठत्), आर्थिक प्रभाव और आक्रामक कूटनीति ने उसे कई आसियान देशों में बढ़त दिलाई है। भारत बुनियादी ढाँचे के वित्तपोषण, व्यापार की मात्रा और भू–राजनीतिक प्रभाव के मामले में प्रतिस्पर्धा करने के लिए संघर्ष करता है।

हालिया घटनाक्रम (2020 के बाद)

कोविड–19 महामारी और आपूर्ति श्रृंखलाओं के वैश्विक पुनर्गठन ने भारत को आसियान के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में खुद को स्थापित करने का एक नया अवसर प्रदान किया है।भारत ने सक्रिय रूप से एक मुक्त, खुले और समावेशी हिंद–प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा दिया है, जो आसियान के एओआईपी के साथ मेल खाता है। रक्षा वार्ता और समुद्री सहयोग को बढ़ाया गया है, विशेष रूप से वियतनाम, इंडोनेशिया और फिलीपींस के साथ।

वैक्सीन कूटनीति और स्वास्थ्य सुरक्षा

भारत ने वैक्सीन मैत्री पहल के तहत कई आसियान देशों को वैक्सीन सहायता प्रदान की है, जिससे

महामारी के दौरान एक जिम्मेदार क्षेत्रीय भूमिका के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत किया है। इसने सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना और दवाइयों तक पहुँच के क्षेत्र में भी सहयोग किया है।

डिजिटल और हरित अर्थव्यवस्था

भारत ने कई आसियान देशों के साथ डिजिटल सहयोग, फिनटेक, ई–कॉमर्स और नवीकरणीय ऊर्जा साझेदारी पर समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं और बातचीत शुरू की है। कोविड के बाद हरित विकास और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना पर ध्यान केंद्रित करने में तेजी आई है।भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने चीन–केंद्रित नेटवर्क पर निर्भरता कम करने के लिए आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (एससीआरआई) शुरू की। भारत विनिर्माण क्षेत्र, विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स और सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में वैकल्पिक क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखलाएं बनाने के लिए आसियान देशों को शामिल करने का इच्छुक है।

निष्कर्ष और भविष्य का दृष्टिकोण

आसियान के प्रति भारत की विदेश नीति एक गतिशील और विकसित होती साझेदारी का प्रतिनिधित्व करती है जो पिछले तीन दशकों में काफी परिपक्व हुई है। सभ्यतागत संबंधों और सीमित उत्तर–औपनिवेशिक जुड़ाव से आगे बढ़कर, यह संबंध रणनीतिक गहराई, आर्थिक महत्व और क्षेत्रीय प्रासंगिकता वाले रिश्ते में तब्दील हो गया है। ''लुक ईस्ट'' और ''एक्ट ईस्ट'' नीतियों के माध्यम से, भारत ने आसियान को अपने क्षेत्रीय दृष्टिकोण के केंद्र में रखते हुए, हिंद–प्रशांत क्षेत्र में एक बड़ी भूमिका निभाने की अपनी मंशा का संकेत दिया है।आसियान के साथ भारत का रणनीतिक जुड़ाव, जो सिंगापुर के साथ विकसित होती साझेदारी द्वारा उजागर होता है, गहन आर्थिक, तकनीकी और सुरक्षा सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव को रेखांकित करता है।व्यापार, बुनियादी ढाँचे, रक्षा सहयोग और सांस्कृतिक कूटनीति में हुई प्रगति भारत की बहुआयामी जुड़ाव रणनीति को दर्शाती है। हालाँकि, चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।खासकर व्यापार घाटे को संतुलित करने, बुनियादी ढाँचे में देरी को दूर करने और चीन के बढ़ते प्रभाव का जवाब देने में। इसके अलावा, दक्षिण चीन सागर जैसे संवेदनशील मुद्दों पर भारत के सतर्क कूटनीतिक रुख और क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) से हटने की घोषणा ने क्षेत्रीय एकीकरण के प्रति उसकी दीर्घकालिक आर्थिक प्रतिबद्धता पर कुछ संदेह पैदा कर दिया है।

फिर भी, आसियान देश भारत को एक स्थिर, लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक रूप से निकटस्थ साझेदार के रूप में महत्व देते हैं जो संप्रभुता का सम्मान करता है और नियम व कानून व्यवस्था आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का समर्थन करता है। आगे बढ़ते हुए, पहलकारी नीति को अपनाते हुए, भारत को संस्थागत संबंधों को गहरा करना होगा, कनेक्टिविटी में सुधार करना होगा और डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित परिवर्तन और स्वास्थ्य सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में नवाचार करना होगा। जैसे–जैसे हिंद–प्रशांत वैश्विक भू–राजनीति का केंद्र बनता जा रहा है, भारत–आसियान संबंध न केवल क्षेत्रीय शांति और समृद्धि के लिए, बल्कि एक नई एशियाई सदी की रूपरेखा तैयार करने के लिए भी महत्वपूर्ण होंगे।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर, भारत–आसियान संबंधों को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित नीतिगत सुझाव प्रस्तावित हैं:

1. कनेक्टिविटी परियोजनाओं में तेजी लाना

भारत को भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान बहु–मॉडल परियोजना को प्राथमिकता देनी चाहिए और उन्हें तेजी से पूरा करना चाहिए, साथ ही बेहतर अंतर–मंत्रालयी समन्वय और मजबूत निगरानी तंत्र भी अपनाना चाहिए।

2. आर्थिक एकीकरण पर पुनः सक्रियता

भारत आरसीईपी से बाहर निकल गया है, लेकिन उसे द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौतों और संभावित आसियान–भारत मुक्त व्यापार समझौते 2.0 की दिशा में काम करना चाहिए, जिसमें सेवाओं, डिजिटल व्यापार और एमएसएमई सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया जाए। क्षेत्रीय व्यापार ढाँचों में सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

3. रणनीतिक संवादों को संस्थागत बनाना

प्रमुख आसियान सदस्यों के साथ वार्षिक सुरक्षा संवाद स्थापित करें और त्रिपक्षीय,बहुपक्षीय संबंधों (जैसे, भारत–वियतनाम–इंडोनेशिया, भारत–जापान–आसियान) का विस्तार करें, जिसमें समुद्री सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखलाओं और साइबर लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

4. प्रवासी कूटनीति का लाभ उठाएँ

मलेशिया, सिंगापुर और म्यांमार में प्रवासी भारतीयों के माध्यम से सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा दें। आदान–प्रदान कार्यक्रमों, विरासत पर्यटन और डिजिटल सांस्कृतिक अभिलेखागार को बढ़ावा दें।

5. क्षेत्रीय सार्वजनिक वस्तुओं को बढ़ावा देना

भारत को दीर्घकालिक रणनीतिक सद्भावना हासिल करने के लिए इस क्षेत्र में सार्वजनिक वस्तुओं, टीके, आपदा राहत, उपग्रह सेवाएँ, जलवायु कार्रवाई वित्तपोषण के प्रदाता के रूप में अपनी स्थिति स्थापित करनी चाहिए।

References -:

1. Acharya, A. (2014). Constructing a security community in Southeast Asia: ASEAN and the problem of regional order (3rd ed.). Routledge.
2. Brewster, D. (2018). India's strategic approach to Southeast Asia. Asia Policy
3. Mohan, C. R. (2003). Crossing the Rubicon: The shaping of India's new foreign policy. Palgrave Macmillan.
4. Ministry of External Affairs (MEA). (2023). India-ASEAN relations.
5. Pant, H. V., & Passi, R. India's Act East Policy: Enhancing India's regional engagement. ORF Issue Brief. https://www.orfonline.org/research/act-east-policy
6. Rajagopalan, R. (2021). India, ASEAN, and the Indo-Pacific. Observer Research Foundation Occasional Paper, 299. https://www.orfonline.org/research/india-asean-indo-pacific/
7. Rath, B. N. (2015). Indian diaspora and foreign policy: The case of ASEAN. International Studies
8. Singh, S. (2020). India and ASEAN: Navigating the Indo-Pacific. Indian Foreign Affairs Journal
9. Panikkar,K.M (1943). The future of Southeast Asia: An Indian view ,Macmillan Company
10. Ganguly, Sumit. India's foreign policy retrospect and prospect, Oxford University Press